JESUS REDEEMS MINISTRIES
युवा
जीवन
मई 2025
बहुत हुआ संकोच
बहुत हुई देरी
अब बिना
रुके दौड़े...

आत्मा में आदर्श

हेलो मित्रों!

युवा जीवन के ज़रिए एक बार फिर आपसे जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस श्रृंखला में, हम 1 तीमुथियुस 4:12 का अध्ययन कर रहे हैं, और उन क्षेत्रों की खोज कर रहे हैं जिनमें मसीही युवाओं को एक उदाहरण बनने के लिए कहा जाता है। पिछले महीने, हमने इस बात पर विचार किया कि प्रेम में आदर्श कैसे बनें। इस महीने, आइए जानें कि आत्मा में एक आदर्श बनने का क्या मतलब है।

आज युवाओं के बीच सबसे आम संघर्षों में से एक खालीपन की भावना है—"मुझे ठीक नहीं लग रहा है... कुछ भी काम नहीं कर रहा है!" इस समस्या का मूल कारण क्या है? यह शारीरिक कमज़ोरी नहीं बल्कि टूटी हुई आत्मा है। कुछ लोग बार-बार चिढ़ जाते हैं, छोटी-छोटी बातों पर झल्ला जाते हैं। दूसरे लोग बेकार के मामलों पर बेवजह गुस्सा हो जाते हैं—यह निराशा की भावना का काम है। फिर ऐसे लोग हैं जिनके दिमाग में अनैतिक विचार लगातार भरे रहते हैं—अशुद्धता की भावना से प्रेरित होकर।

अनेक तरीकों से, आज युवा जन विभिन्न आत्माओं द्वारा उछाले और फाड़े जा रहे हैं। तो फिर, हम कैसे दृढ़ रह सकते हैं और आत्मा में गवाही दे सकते हैं? आइए साथ मिलकर खोजें!

भजन संहिता की पुस्तक में, हम एक हार्दिक प्रार्थना पाते हैं: "हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नए सिरे से उत्पन्न कर।"

प्रिय मित्रों, इन दिनों में, हमें अपनी आत्मा की स्थिति की जांच करने के लिए एक पल लेना चाहिए। इसे क्या प्रभावित करता है? इसे क्या बंदी बनाता है? जब हम पवित्र आत्मा द्वारा चलाए जाते हैं, तो हमारे विचार शुद्ध होंगे, और हमारे कार्य पवित्रता को प्रगट करेंगे। हमारे माध्यम से, दूसरों को आशीष मिलेगी। बाइबल मनुष्य की आत्मा को प्रभु द्वारा दिए गए दीपक के रूप में वर्णित करती है - एक ऐसा प्रकाश जिसे कभी नहीं बुझाना चाहिए। इसीलिए पौलुस, थिस्सलुनीकियों को लिखते हुए आग्रह करता है, "आत्मा को मत बुझाओ।"

राजा सुलैमान ने अपनी बुद्धि में घोषणा की, "एक मनुष्य की आत्मा उसे रोग में सहारा देती है।" वह यह भी कहता है, "लेकिन कुचली हुई आत्मा को कौन सह सकता है?" अगर हमारी आत्मा टूट गई है - सरल शब्दों में, अगर हमारी आत्मा घायल है - तो कौन वास्तव में इसे ठीक कर सकता है?

आज बहुत से युवा आध्यात्मिक घावों से पीड़ित हैं, जिसके कारण उन्हें परेशानी और चिंता का अनुभव होता है। लेकिन याद रखें, आत्मा जीवंत और जीवन से भरपूर होनी चाहिए! हमें यह सुनिश्चित करने के लिए कार्य करना चाहिए कि हमारे भीतर आत्मा की आग कभी न बुझे। इसलिए पौलुस ने तीमुथियुस को लिखे अपने पत्र में उसे आत्मा के बारे में सतर्क रहने का आग्रह किया। हमारा आध्यात्मिक विकास हमारी आत्मा की स्थिति पर बहुत हद तक निर्भर करता है।

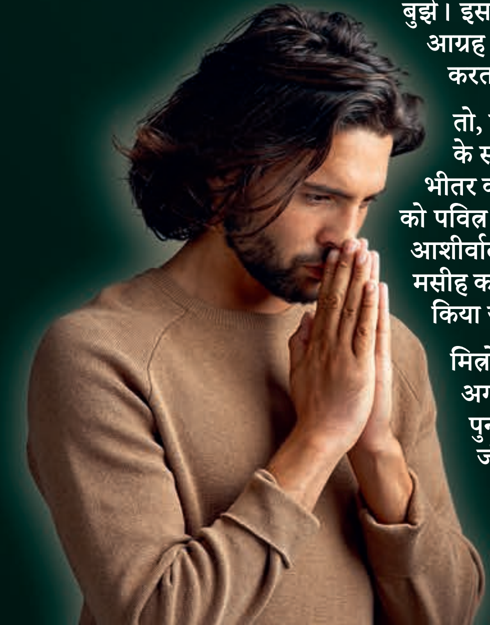

तो, मित्रों, एक पल के लिए मनन करें। बाइबिल में, हम देखते हैं कि परमेश्वर की आत्मा यूसुफ के साथ थी, और यहाँ तक कि फिरौन ने भी इसे पहचाना, इसे ईश्वरों की आत्मा कहा। हमारे भीतर काम करने वाली आत्मा की प्रकृति हमारे जीवन के माध्यम से प्रकट होती है। अपनी आत्मा को पवित्र आत्मा के नियंत्रण में सौंप दें, और आप निश्चित रूप से युवावस्था के इस काल में उनके आशीर्वाद का अनुभव करेंगे। घायल आत्मा को ठीक करने का केवल एक ही तरीका है—यीशु मसीह का कीमती लहू। केवल जब वह निकट आता है, तभी आत्मा की टूटी हुई अवस्था को बहाल किया जा सकता है। वह चंगा करने वाला है, वह जो कुचले हुए मन को ऊपर उठाता है।

मित्रों, हमारा रुझान पवित्र आत्मा है! हताशा और निराशा एक मसीही युवा का स्तर नहीं है। अगर हमें इस संसार के सामने एक गवाही के रूप में दृढ़ रहना है, तो हमारी आत्मा को पुनर्जागृत और मजबूत होना चाहिए। हमें एक उच्च जीवन के लिए बुलाया गया है, एक ऐसा जीवन जो परमेश्वर के महान उद्देश्यों के लिए अलग रखा गया है। इसलिए निराशा में न रहें। उठो! अपनी आत्मा को जगाओ! अपनी जागृति को सिर्फ़ अपने लिए ही न होने दें, बल्कि इसे अन्य युवा जीवन में भी आग भड़काने दें!

प्रस्तावना

मेरे प्रिय युवा योद्धाओं

हमारे प्रभु यीशु मसीह के महिमामय नाम में आपको अभिवादन!

हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम अंतिम पुनर्जागृति के दिनों में रह रहे हैं, जो परमेश्वर के राज्य के लिए उत्साहपूर्वक दौड़ रहे हैं। प्रभु हमसे जो अपेक्षा करते हैं वह है तीव्रता, जोश और तेज़ी। हम प्रभु के लिए जो भी सेवा करते हैं, उसमें एक तत्परता और आग होनी चाहिए। साथ ही, हमें लगातार स्वयं की जाँच करनी चाहिए - हमें जो काम सौंपा गया है, उसे हम किस जोश के साथ कर रहे हैं? अगर दो महीने में पूरा होने वाला काम चार महीने तक खिंचता है, तो यह स्पष्ट रूप से जुनून की कमी को दर्शाता है।

जब इस्राएल के लोगों को बाबुल की कैद से छुड़ाया गया और वे मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए यरूशलेम लौटे, तो उन्होंने बड़े उत्साह के साथ नींव रखी। लेकिन जैसे ही विरोध हुआ, काम रुक गया - मंदिर का निर्माण *15* साल तक अधूरा रह गया! कुछ लोगों ने तो परमेश्वर के काम को छोड़ दिया और अपना ध्यान अपने निजी कामों पर लगा दिया, प्रभु के घर के बजाय अपने घर बनाने लगे। लेकिन जब प्रभु का वचन आया, तो लोग एक बार फिर से उत्साहित हो गए; वे नई ताकत के साथ उठे और हर प्रतिरोध को पार करते हुए, तत्परता और दृढ़ संकल्प के साथ काम पूरा किया।

कई बार ऐसा होता है जब निराशा और कमजोरी हमें परमेश्वर के काम से दूर खींचने की कोशिश करती है। फिर भी, यह स्वयं प्रभु ही है जो हमें मजबूत बनाता है और स्थापित करता है, हमें बिना थके दौड़ने की अनुग्रह और सामर्थ देता है, बिना रुके उसका काम आगे बढाता है।

लेकिन हमें तेजी से क्यों आगे बढ़ना चाहिए?

क्योंकि स्वर्ग तेज गति से आगे बढ़ रहा है! इसलिए, युवा लोगों के रूप में जिनको उसके उद्देश्य के लिए बुलाया गया है, आपको अपने द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक सेवकाई में तीव्रता, उत्साह और गति के साथ सेवा करने के लिए स्वयं को पूरी तरह से समर्पित करना चाहिए। ये तीन गुण - तीव्रता, उत्साह और तेज़ी - परमेश्वर के हर सेवक में पाए जाने वाले विशिष्ट लक्षण हैं जिन्होंने उनकी महिमा के लिए सामर्थ के कार्य किए हैं।

प्रेरित पौलुस ने अथक जुनून के साथ सुसमाचार के मिशन का पीछा करते हुए अपनी दौड़ को अथक रूप से चलाया।
दाऊद युद्ध का सामना करने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ दौड़ा।
एस्तेर के दूत अच्छी खबर लाने के लिए घोड़ों और ऊँटों पर तेजी से सवार हुए।
पौलुस ने जोश के साथ सुसमाचार का प्रचार करने में कोई समय बरबाद नहीं किया। हर पुनर्जागृति के नायक की भावना ऐसी ही थी!

प्रज्वलित करने वालों के रूप में,

परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने में आपकी तीव्रता स्पष्ट होनी चाहिए।
पुनर्जागृति के दर्शन को आगे बढ़ाने में आपका उत्साह दिखाई देना चाहिए।
और आपके जीवन और सेवकाई की पहचान तेजी बन जानी चाहिए।

बहुत हो गई हिचकिचाहट; बहुत हो गई देरी! अब हमारे पैर अथक संदेशवाहकों में बदल जाएँ, जो केवल यीशु की महिमा के लिए बिना आराम किए दौड़ते रहें! सब कुछ यीशु के लिए!

मसीह के मिशन में
मोहन सी. लाजर

Heart Beat

प्रिय भाई,

मैंने हाल ही में अपनी 10वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा लिखी है। मैं कोई असाधारण रूप से प्रतिभाशाली छात्र नहीं हूँ, बल्कि एक औसत छात्र हूँ। मेरा सपना है कि मैं अपनी उच्चतर माध्यमिक पढ़ाई के लिए कंप्यूटर साइंस ग्रुप लूँ। हालाँकि, मेरे शिक्षक ने हमारी कक्षा की परीक्षाओं के अंकों के आधार पर दृढ़ता से कहा है कि मेरे जैसे छात्र, जिन्हें औसत या सीमांत अंक मिलते हैं, वे कंप्यूटर साइंस ग्रुप के लिए पात्र नहीं होंगे। यह केवल उन छात्रों को दिया जाता है जो अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन करते हैं। इसके बजाय, मुझे कॉमर्स या इतिहास समूह लेने की सलाह दी गई है। लेकिन मुझे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरा मुख्य लक्ष्य कंप्यूटर साइंस पूरा करना और एक सॉफ्टवेयर डेवलपर बनना है। लेकिन अगर मैं अपने शिक्षक की सलाह मानूँ और दूसरा समूह लूँ, तो मैं अपना सपना कैसे पूरा कर पाऊँगा? मुझे दृढ़ विश्वास है कि मैं अपनी बोर्ड परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करूँगा। क्या औसत अंक प्राप्त करने वाले छात्रों के भी सपने और आकांक्षाएँ नहीं होतीं? क्या सिर्फ़ मेरे मौजूदा अंकों के कारण किसी भी समूह से संतुष्ट होना ज़रूरी है?

\- शाइनी, चेन्नई

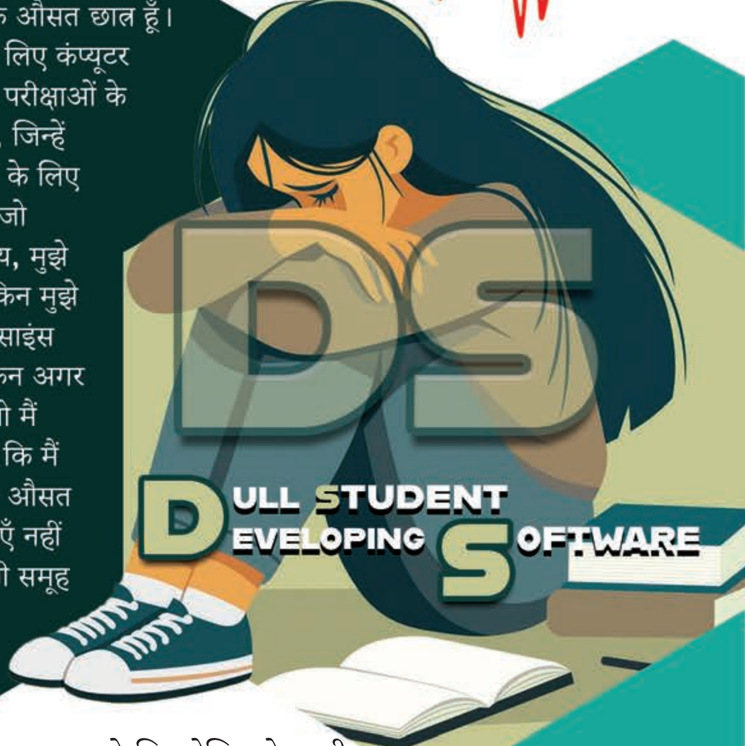

प्रिय बहन शाइनी,

मैं समझता हूँ कि आप किस चिंता और डर से गुज़र रही हैं, यह सोचकर कि क्या आपके सपने सच होंगे की नहीं। मैं आपकी खूबसूरत महत्वाकांक्षा और दूरदर्शी सोच की सराहना करता हूँ। आज बहुत से स्नातक यह भी नहीं जानते कि कॉलेज खत्म करने के बाद वे भविष्य में क्या करना चाहते हैं। लेकिन 10वीं कक्षा में ही अपने भविष्य की योजना बनाने की आपकी क्षमता सराहनीय है।

शाइनी, इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई करके सॉफ्टवेयर डेवलपर बनने के अपने लक्ष्य को हासिल कर लेंगी। इसलिए, उम्मीद मत खोइए।

आपके शिक्षक ने वास्तविकता बताई है। कंप्यूटर साइंस समूह में आने के लिए, आपको पर्याप्त अंकों की आवश्यकता है। केवल केंद्रित प्रयास और समर्पण के साथ ही आप इसके लिए योग्य हो सकते हैं। हो सकता है कि आपके शिक्षक ने आपको आसान समूह लेने की सलाह दी हो, यह सोचकर कि पढ़ाई आपके लिए बोझिल हो सकती है। इसलिए, उनके इरादों को गलत न समझें।

यदि आप वास्तव में सॉफ्टवेयर डेवलपर बनना चाहते हैं, तो आपको ये कदम उठाने चाहिए:

विश्वास रखें कि आप अपनी 10वीं कक्षा की परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करेंगे।

11वीं कक्षा की शुरुआत से ही अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान केंद्रित रखें।

अनावश्यक ध्यान भटकाने वाली गतिविधियों और समय बर्बाद करने वाली गतिविधियों से बचें।

भले ही आप अभी औसत दर्जे के छात्र हों, लेकिन आप एक बेहतरीन छात्र बन सकते हैं। लेकिन इसके लिए आपको योजना बनानी होगी, तैयारी करनी होगी और स्वयं को अच्छी तरह से प्रस्तुत करना होगा।

कई लोगों के पास सपने तो होते हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने के लिए उनमें दृढ़ संकल्प और प्रयास की कमी होती है।

11वीं कक्षा आपके लक्ष्य की नींव है। अगर आप अच्छी तरह से पढ़ाई करेंगे, तो 12वीं कक्षा आपको बहुत भारी नहीं लगेगी।

परीक्षाएँ नज़दीक हों या न हों, रोज़ाना 5-6 घंटे पढ़ाई करने की आदत डालें।

अगर आप सॉफ़्टवेयर डेवलपर बनना चाहते हैं, तो आपको कई प्रोग्रामिंग भाषाएँ सीखनी चाहिए। अभी से अपना ध्यान जावा, सी++, सी, पायथन और बहुत कुछ सीखने पर लगाना शुरू करें।

अगर आप 12वीं कक्षा में यह प्रयास करेंगे, तो आप अच्छे अंक प्राप्त कर सकेंगे और कंप्यूटर साइंस ग्रुप में आ सकेंगे। फिर आप कंप्यूटर साइंस में अपनी उच्च शिक्षा जारी रख सकते हैं। लेकिन अगर आप अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं करेंगे, तो आपको असफलता का सामना करना पड़ सकता है, जैसा कि आपके शिक्षक ने बताया है।

शाइनी, मैं भी कभी एक औसत छात्र था। लेकिन जब मैंने यीशु पर भरोसा किया, तो उन्होंने मेरे थोड़े से ज्ञान को आशीष दिया और असफलताओं और औसत अंकों के बावजूद मुझे सफल होने में मदद की।

बाइबिल से दाऊद का उदाहरण लें। सभी ने उसे अनदेखा कर दिया, यह मानते हुए कि वह केवल भेड़ चराने के लिए ही योग्य है। उसके पिता, यिशे ने उसके भाइयों को सेना में भेज दिया, लेकिन दाऊद को पीछे छोड़ दिया। हालाँकि, जब पूरी सेना गोलियत से डर गई, तो

एक युवा दाऊद जो युद्ध के बारे में कुछ नहीं जानता था - ने गोलियत से लड़ाई की और उसे हरा दिया। जिसे कम आंका गया था, उसे परमेश्वर ने आशीष दिया और ऊपर उठाया।

शाइनी, यीशु पर अपना भरोसा रखो और अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करो। "धन और महिमा दोनों प्रभु से आते हैं; वह सब पर राज्य करता है" (1 इतिहास 29:12)। "यदि तुम विश्वास करते हो, तो तुम प्रार्थना में जो कुछ भी मांगोगे वह तुम्हें मिलेगा" (मत्ती 21:22)। विश्वास के साथ अध्ययन करो, कड़ी मेहनत करो, और प्रभु निश्चित रूप से तुम्हें सफलता प्रदान करेंगे...!

पुनःजागृति की प्यास जो परमेश्वर चाहता है...!

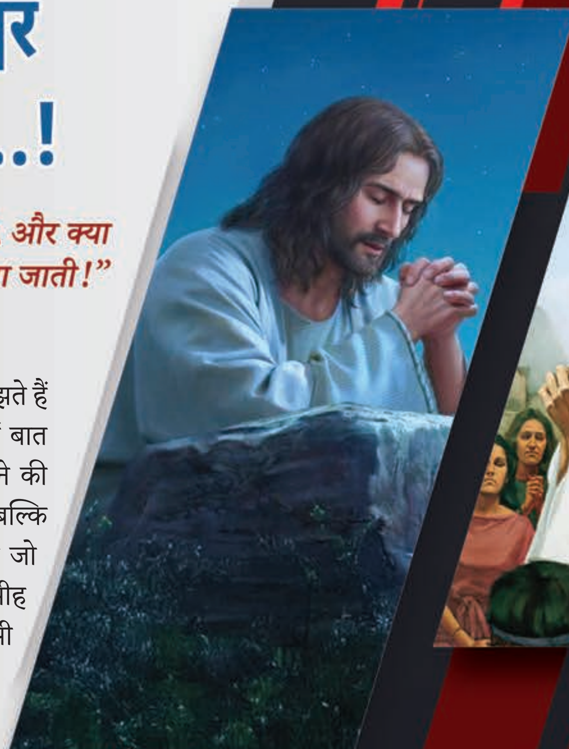

"मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ, और क्या चाहता हूँ केवल यह की अभी सुलग जाती!" (लूका 12:49)

जब हम इस वचन को पढ़ते हैं, तो हम समझते हैं कि प्रभु एक अलौकिक जागृति के बारे में बात कर रहे हैं। वह पृथ्वी पर जो आग लगाने की इच्छा रखते हैं, वह कोई और नहीं बल्कि पुनःजागृति की आग है - एक ऐसी आग जो लोगों के हृदयों में जलनी चाहिए। यह मसीह के हृदय में जलती हुई इच्छा थी, एक ऐसी लालसा जिसने उसकी प्रार्थनाओं को भी आकार दिया होगा।

यीशु सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना किया करते थे (मरकुस 1:35)। वह शाम को प्रार्थना करने के लिए पहाड़ों पर चले जाते थे (मत्ती 14:23)। कभी-कभी, वह पूरी रात पहाड़ पर प्रार्थना में बिताते थे (लूका 6:12)।

पुराने समय के संतों द्वारा कहा जाता है कि यीशु प्रति दिन कम से कम चार घंटे एकांत प्रार्थना में बिताते थे। लेकिन यह सिर्फ इतना ही नहीं था - शास्त्र हमें बताता है कि यीशु अपने शिष्यों के साथ मिलकर भी प्रार्थना करते थे। इतने जोश और लगातार प्रार्थना के पीछे क्या कारण था? यह उनके की कभी न बुझने वाली प्यास थी: कि आग प्रज्वलित हो और पूरे विश्व में फैल जाए।

पिन्तेकुस्त के दिन, यह अलौकिक इच्छा पूरी हुई। आग ऊपरी कमरे में एकत्रित 120 विश्वासियों पर अग्निमय जीभों के रूप में उतरी। वे सभी पवित्र आत्मा से भर गए। प्रेरितों के काम अध्याय 2 में, हम मसीह की लालसा की पूर्ति को देखते हैं - जिस आग के लिए वह तरस रहा था, वह आखिरकार धधकने लगी थी।

हमें अपने भीतर एक तीव्र लालसा और ज्वलंत प्यास रखनी चाहिए ताकि पुनरुत्थान की वह आग जो कभी उस ऊपरी कमरे में जलती थी, आज हमारी भूमि पर भी उड़ेल दी जाए। अभी भी, हम उत्साह के साथ प्रार्थना में हैं, अंतिम महान जागृति की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो प्रभु के आगमन से पहले होगी। यह सामर्थी अंत के दिनों की पुनःजागृति होगी।

प्रेरितों के काम अध्याय 2 में, हम उस उंडेले के बारे में पढ़ते हैं जिसने पहली सदी में आरंभिक चर्च को प्रज्वलित किया था। तब से, इतिहास परमेश्वर के ऐसे कई आंदोलनों का गवाह है - वेल्स, स्कॉटलैंड, इंग्लैंड, कोरिया, इंडोनेशिया और कई अन्य देशों में। लेकिन आज हम जिस बात का इंतजार कर रहे हैं, वह एक अभूतपूर्व, वैश्विक, अंत के दिनों की पुनःजागृति है। और इसी उद्देश्य के लिए परमेश्वर हमें तैयार कर रहा है।

इस पुन:जागृति को देखने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

हमें अपने भीतर पुन:जागृति के लिए एक गहरी भूख और कभी न बुझने वाली प्यास पैदा करनी चाहिए!

पुन:जागृति हर संकट का जवाब है। कलिसियायें फलेंगे-फूलेंगे और बढ़ेंगे। मण्डली बदल जाएगी, और लोगों को परमेश्वर के राज्य में खींच लाएगी। जब यह पवित्र प्यास और तीव्र लालसा हमारे हृदयों को भर देगी, तभी हम परमेश्वर के उस सामर्थी कदम को देख पाएंगे जिसकी हम इतनी इच्छा करते हैं।

हालाँकि स्कॉटलैंड कभी एक मसीही राष्ट्र था, लेकिन यह अपनी आध्यात्मिक जड़ों से बहुत दूर चला गया था। जहाँ भी कोई मुड़ता, शराब की दुकानों और डांस क्लबों ने ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया था। सांसारिक सुखों के नशे और मोह में लोग, ऐसे स्थानों पर अपना समय बर्बाद करते थे, और मसीह को लगभग भूल गए थे। परिणामस्वरूप, राष्ट्र प्रभु से दूर हो गया, और कलीसियाएं उजाड़ और खाली हो गए। इस आध्यात्मिक गिरावट को देखते हुए, जॉन नॉक्स ने वर्षों तक प्रार्थना की, और चिल्लाते हुए कहा, "एक पुन:जागृति जरुर चाहिए!" उनकी लगातार प्रार्थनाओं के जवाब में, परमेश्वर ने स्कॉटलैंड की भूमि पर एक सामर्थी पुन:जागृति भेजा। जब पुन:जागृति हुई, तो शराब के ठेके और डांस क्लब ने अपने दरवाजे बंद कर दिए, और भीड़ एक बार फिर कलीसियाओं में उमड़ने लगी। पूरे देश में एक गहरा आध्यात्मिक परिवर्तन हुआ। इतिहास में दर्ज है कि इस पुन:जागृति ने स्कॉटलैंड पर सौ से अधिक वर्षों तक एक सामर्थी प्रभाव छोड़ा। इसी तरह, वेल्स - लुभावने पहाड़ों और शांत झीलों की भूमि - हालांकि अपने परिदृश्य में सुंदर थी, लेकिन पाप की लहर से अभिभूत थी। इवान रॉबर्ट्स, एक युवा व्यक्ति, अपने देश के लिए गहरे बोझ से जल रहा था, अपने हृदय से चिल्ला रहा था, "मेरे देश को परिवर्तित होना होगा!" पुन:जागृति की एक अमिट प्यास के साथ, उसने ग्यारह लंबे वर्षों तक ईमानदारी से प्रार्थना की। अंत में, 1904 में, पुन:जागृति की आग भड़क उठी। परिणामस्वरूप, शराबखानों ने अपने दरवाजे बंद कर दिए, और लोगों ने सड़कों पर अपनी शराब की बोतलें तोड़ दीं। पूरे देश में पश्चाताप की एक सामर्थी लहर बहने लगी। इवान रॉबर्ट्स जहाँ भी गए, लोगों ने अपने पापों पर रोया और उद्धार पाने के लिए प्रभु की ओर मुड़े। चर्च क्षमता से अधिक भरने लगे, और एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक जागृति ने देश को जकड़ लिया, जिससे समाज में एक उल्लेखनीय परिवर्तन आया। सिर्फ़ दो वर्षों में, वेल्स राष्ट्र पूरी तरह से बदल गया।

वह पुन:जागृति पूरे यूरोप महाद्वीप में फैल गयी और पेंटेकोस्टल जागृति के बीज बोए जो 1906 में अमेरिका में फूट पड़ा। परमेश्वर के इस सामर्थी कदम को देखते हुए, विलियम सीमोर नामक एक परमेश्वर के जन ने अमेरिका में अज़ूसा स्ट्रीट पर वचन की घोषणा की, और पवित्र आत्मा के उंडेले जाने से एक सामर्थी जागृति प्रज्वलित हुई। वहाँ जो शुरू हुआ वह पेंटेकोस्टल जागृति के रूप में जाना जाता है। उसी से, पेंटेकोस्टल कलिसियाएं जो अब दुनिया भर में फैल गए हैं, उत्पन्न हुए।

पुन:जागृति एक राष्ट्र, एक शहर या लोगों का परिवर्तन है। ऐसा परिवर्तन केवल पवित्र आत्मा द्वारा ही किया जा सकता है। पुन:जागृति तब होती है जब पवित्र आत्मा उंडेला जाता है और बहुत से लोग बच जाते हैं। यदि हम वास्तव में अपने देश में ऐसी पुनःजागृति देखना चाहते हैं, तो हमें पहले अपने राष्ट्र की आत्माओं के लिए एक गहन बोझ उठाना होगा।

हमारे घुटने प्रार्थना में थक जाना चाहिए, और हमें कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए। तभी हम पुन:जागृति को देख पाएँगे।

प्रिय युवा लोगों, इसे स्पष्ट रूप से समझ लें – पुन:जागृति केवल ज़ोर से गाना, जोश से ताली बजाना या भावनात्मक रूप से चिल्लाना नहीं है। क्या आप अपने हृदय में पुन:जागृति के लिए एक वास्तविक बोझ रखते हैं? क्या आपके पास इसे होते देखने के लिए एक गहरी लालसा, एक समर्पित प्रतिबद्धता है? इस पर गंभीरता से विचार करें। आज, क्या आप स्वयं को समर्पित करेंगे और घोषणा करेंगे, "मैं ईमानदारी से प्रार्थना करने और पुन:जागृति की कीमत चुकाने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता हूँ"? यदि आप ऐसा करते हैं, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रभु आपको ऊपर उठाएँगे - ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने जॉन नॉक्स, इवान रॉबर्ट्स और विलियम सीमोर का इस्तेमाल किया था - आपके देश में एक सामर्थी पुन:जागृति की आज्ञा देने के लिए...!

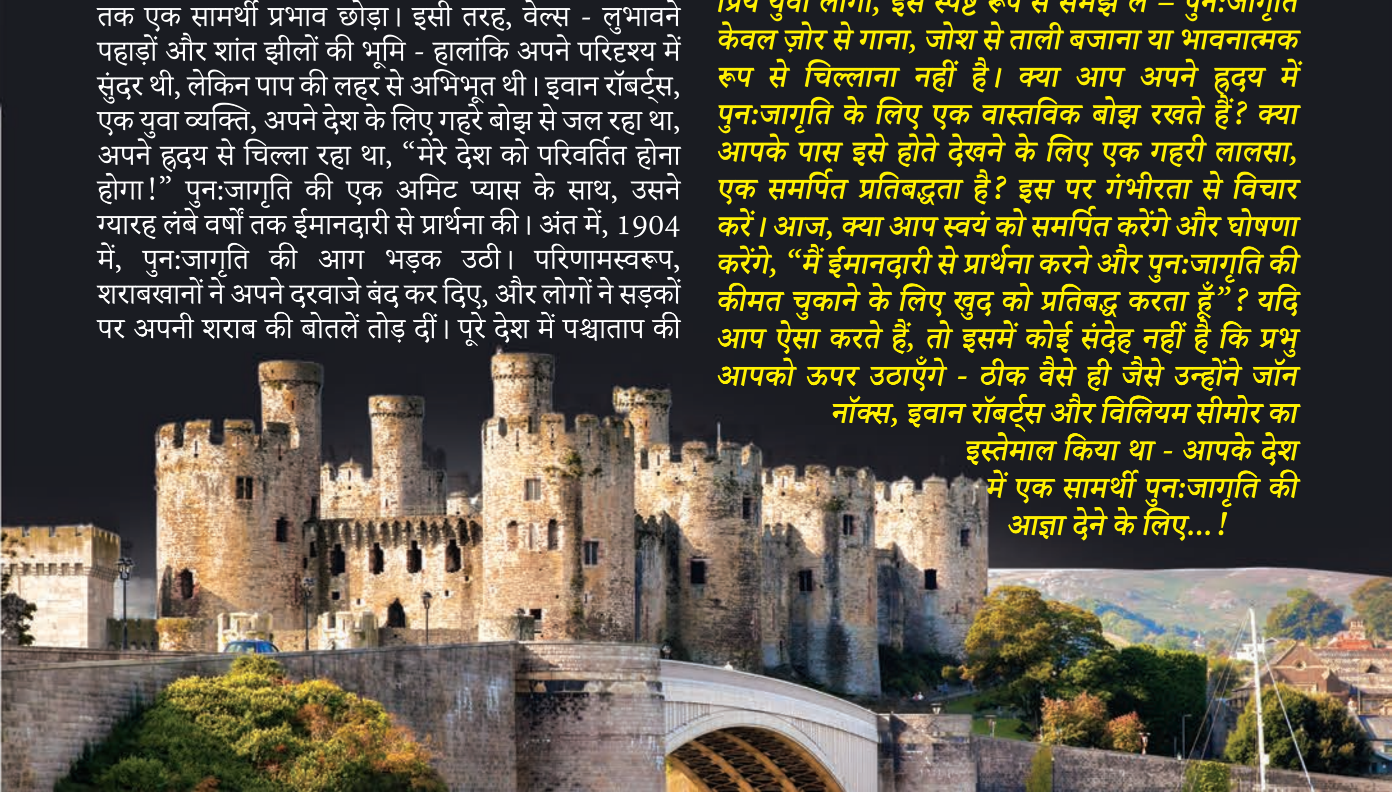

बिना रुके दौड़ें

जैसे-जैसे अंत समय सामने आता है और दुश्मन अपने प्रयासों को तेज़ करता है, यह जानते हुए कि उसका समय कम है, हमें निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए। इसके बजाय, हमें अथक प्रयास करते हुए, राज्य के सुसमाचार की घोषणा करनी चाहिए और लोगों को यीशु के आगमन के लिए तैयार करना चाहिए। सुसमाचार मनुष्य जाति को सच्चे इंसान के रूप में जीने में सक्षम बनाता है, जो निराशा में खोए हुए लोगों को आशा प्रदान करता है। लेकिन आशा का यह संदेश कौन ले जाएगा? आज भी, परमेश्वर का हृदय तरसता है और वह पूछता है, "मैं किसे भेजूँ? और हमारे लिए कौन जाएगा?" (यशायाह 6:8)।

जब अरामी(सीरियाई) सेना ने सामरिया को घेर लिया, तो अकाल और भुखमरी ने देश को तबाह कर दिया। अकाल ने इस्राएलियों को अपने ही बच्चों को मारने और खाने के भयानक स्तिथि पर पहुँचा दिया। असहायता और निराशा ने लोगों को जकड़ लिया, और यहाँ तक कि इस्राएल का राजा भी अपने राष्ट्र की पीड़ा के आगे शक्तिहीन हो गया। ऐसी निराशाजनक स्थिति के बीच, चार कोढ़ी शहर के फाटक पर बैठे थे, अपने भाग्य पर सवाल उठा रहे थे: "हम मरने तक यहाँ क्यों बैठे रहें?"

(2 राजा 7:3)। साहस के साथ, वे अरामी छावनी की ओर बढ़े - केवल यह जानने के लिए कि प्रभु ने चमत्कारिक रूप से सामर्थी अरामी सेना को भागने के लिए मजबूर कर दिया था, और पीछे प्रावधानों से भरा एक त्यागा हुआ छावनी छोड़ दिया था।

अपनी संतुष्टि के साथ खाने-पीने के बाद, इन चार कोढ़ियों को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास हुआ। उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "तब इन कुष्ठ रोगियों ने आपस में बातें कीं, "हम लोग बुरा कर रहे हैं। आज हम लोगों के पास शुभ सूचना है। किन्तु हम लोग चुप हैं। यदि हम लोग सूरज के निकलने तक प्रतीक्षा करेंगे तो हम लोगों को दण्ड मिलेगा।" (2 राजा 7:9)। बिना देरी किए, वे राजा और लोगों को उद्धार की खबर देते हुए शहर वापस लौट आए, और सामरिया को करीबी विनाश से बचाया। हालाँकि शरीर से कमज़ोर और समाज द्वारा बहिष्कृत, वे आशा का संदेश देने के लिए हर बाधा को पार करते हुए, खुशखबरी साझा करने में संकोच नहीं करते थे।

सबसे बड़ी खबर होने के बावजूद - यीशु मसीह - हममें से कई लोग बहाने बनाते हुए हिचकिचाते हैं: "मुझे बोलना नहीं आता," "मेरे पास बुद्धि की कमी है," या "कोई भी मेरी बात नहीं सुनेगा।" क्या हम इसी अनिच्छा में आगे बढ़ते रहेंगे, या लोगों को यीशु के पास लाने के लिए हम तत्परता से आगे बढ़ेंगे? चुनाव हमें करना है—आज!

इस मई में, खेल के मैदानों या सोशल मीडिया पर समय बर्बाद करने के बजाय, और गर्मियों की छुट्टियों में हिल स्टेशनों पर घूमने जाने के बजाय, आइए हम जहाँ कहीं भी हों, लोगों को खोजें और मसीह के प्रेम को प्रकट करने के लिए मेहनत करें। सुसमाचार प्रचार को एक दायित्व के रूप में न लें—इसे प्रेम से करें, और प्रभु आपके प्रयासों को पुरस्कृत करेंगे।

प्रेरित थोमा और परमेश्वर द्वारा भेजे गए मिशनरियों ने हमारे और हमारे राष्ट्र के लिए गहरे प्रेम से अथक परिश्रम किया, और मसीह के लिए एक बड़ी फसल काटी। 1820 और 1835 के बीच, मिशनरी रेव. सी.टी.ई. रेनियुस ने तिरुनेलवेली जिले में बड़ी संख्या में लोगों को उद्धार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अटूट समर्पण के साथ, उन्होंने मसीह के सुसमाचार की घोषणा करते हुए 370 से अधिक चर्च और 107 प्राथमिक विद्यालय स्थापित करने में 15 साल बिताए।

प्रचार के अलावा, उन्होंने लंदन से आयात और छपे ट्रैक्ट का उपयोग किया, मसीही शिक्षाओं को फैलाने और आम लोगों के बीच साक्षरता बढ़ाने के लिए हज़ारों की संख्या में वितरित किए। उनके सेवकाई का प्रभाव गहरा था - अकेले 1825 में, 3,000 से अधिक आत्माओं ने मसीह को अपनाया। दिन-रात सुसमाचार प्रचार के प्रति उनकी अथक प्रयास ने उन्हें तिरुनेलवेली के प्रेरित की स्थायी उपाधि दिलाई।

प्रिय युवा विश्वासियों, समय क्षणभंगुर है - इसे भुनाना सीखें! हर दिन कम से कम एक व्यक्ति के साथ मसीह को साझा करना अपना मिशन बनाएं। चाहे अकेले हों या समूह के साथ, ज़रूरतमंदों की तलाश करें, आशा के शब्द बोलें और उन्हें मसीह की ओर ले जाएँ। बिना थके किए दौड़ें - जब तक कि हर आत्मा राज्य के लिए जीत न जाए!

सनसनीखेज खबर!

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? इस श्रृंखला, सनसनीखेज़ खबर में एक बार फिर आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई!

इस खास अवसर पर, मैं उन सभी मेहनती हाथों को मज़दूर दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ जो घर बनाते हैं, राष्ट्रों को आकार देते हैं, और आज बेहतर कल बनाने के लिए मेहनत करते हैं! परमेश्वर आप में से हर एक को आशीष दे जो अपनी युवावस्था में अथक परिश्रम करते हैं, यह जानते हुए कि केवल कड़ी मेहनत और दृढ़ता के माध्यम से ही उज्ज्वल भविष्य सुरक्षित किया जा सकता है।

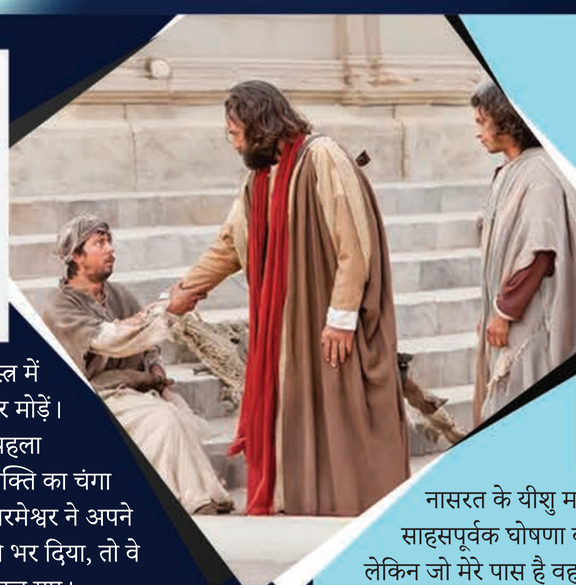

अब, आइए अपना ध्यान पवित्रशास्त्र में दर्ज एक प्रभावशाली घटना की ओर मोड़ें। मसीह के पुनरुत्थान के बाद सबसे पहला चमत्कार मंदिर के द्वार पर लंगड़े व्यक्ति का चंगा होना था। पिन्तेकुस्त के दिन, जब परमेश्वर ने अपने अनुयायियों को अलौकिक सामर्थ से भर दिया, तो वे दुनिया को बदलने वाले प्रेरितों में बदल गए। पतरस और युहन्ना, जो कभी साधारण मछुआरे थे, प्रार्थना के लिए मंदिर जा रहे थे, जब उनकी मुलाकात एक लंगड़े भिखारी से हुई जो भिक्षा की उम्मीद कर रहा था। लेकिन चांदी या सोने के बजाय, उन्होंने उसे कुछ और भी महान चीज़ की पेशकश की - नासरत के यीशु मसीह के नाम पर चंगाई! उन्होंने साहसपूर्वक घोषणा की, “चाँदी और सोना मेरे पास नहीं है, लेकिन जो मेरे पास है वह मैं तुम्हें देता हूँ: नासरत के यीशु मसीह के नाम पर, उठो और चलो!” उसी क्षण, उसकी कमज़ोर टांगों में बल आ गया, और वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया, चलने लगा, कूदने लगा, और मंदिर में प्रवेश करते ही परमेश्वर की स्तुति करने लगा! परमेश्वर की सामर्थ के काम करने की क्या ही अविश्वसनीय गवाही!

क्या यह केवल उन दिनों में ही था? अब के बारे में क्या?जब मैं इस प्रश्न पर विचार कर रहा था, तो इंग्लैंड से एक रोमांचक समाचार मेरे पास पहुँचा। ठीक है, आइए देखें कि वहाँ क्या हुआ।

स्मिथ विगल्सवर्थ, जिन्हें 20वीं सदी के सबसे महान धर्मगुरुओं में से एक माना जाता है, को एक बार एक व्यक्ति के घर भोजन के लिए आमंत्रित किया गया था। इस व्यक्ति के पैर नहीं थे। भोजन समाप्त करने के बाद, वे कुछ देर तक बातचीत करते रहे। जब वे बात कर रहे थे, तो स्मिथ के हृदय में इस व्यक्ति की स्थिति के लिए एक गहरा बोझ उमड़ पड़ा। फिर, अटूट विश्वास के साथ, उसने उस आदमी की ओर देखा और कहा, "कल सुबह, जाकर अपने लिए एक नये जूते खरीद लेना।" इतना कहकर, वह बस चला गया। हालाँकि, वह आदमी अवाक रह गया। "जूते? मेरे लिए? लेकिन मेरे पास तो पैर भी नहीं हैं!" उसने अपने आप को एक व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ सोचा। लेकिन उस रात, जब वह बिस्तर पर लेटा था, तो उसे नींद नहीं आ रही थी। उसे लगातार परमेश्वर की आवाज़ सुनाई दे रही थी, "जैसा मेरा सेवक कहता है वैसा ही करो।"

भोर होते ही, वह आज्ञा मानने के लिए दृढ़ निश्चय के साथ उठा। वह शहर की ओर चल पड़ा और एक जूते की दुकान खुलने का इंतज़ार करने लगा। जब दुकानदार आया, तो उसने उस आदमी का स्वागत किया और पूछा, "सर, आप किस तरह के जूते की तलाश कर रहे हैं? कृपया मुझे बताएँ कि आपको किस रंग और साइज़ की ज़रूरत है।" एक पल के लिए, उसे संकोच ने जकड़ लिया। दुकानदार ने उसकी हालत देखकर अचानक रुककर माफ़ी माँगते हुए कहा, "ओह, मुझे बहुत खेद है, सर! लेकिन... मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ? बिना पैरों के, आप जूते कैसे पहन सकते हैं?" उस आदमी ने बिना किसी हिचकिचाहट के जवाब दिया, "कोई बात नहीं। मुझे काले रंग के जूते चाहिए, साइज़ आठ।"

हालांकि हैरान होकर, दुकानदार ने जूते लिए और उन्हें थमा दिया। फिर चमत्कार हुआ। जिस क्षण आदमी ने एक जूता अपने पैर रहित अंग पर रखा - एक पैर बनना शुरू हो गया! हैरान होकर, उसने जल्दी से दूसरा जूता पहन लिया, और उसका दूसरा पैर भी बढ़ गया! दुकानदार पूरी तरह से अविश्वास में जम गया, यह समझने में असमर्थ कि अभी क्या हुआ था। लेकिन वह आदमी? वह उस दुकान से सिर्फ़ एक जोड़ी नया जूता लेकर नहीं निकला - वह बिल्कुल नए पैरों के साथ बाहर निकला! जब यह खबर स्मिथ विगल्सवर्थ तक पहुँची, तो वह ज़रा भी हैरान नहीं हुआ। आखिरकार, यह वही था जिसकी उसने उम्मीद की थी। विश्वास द्वारा बोला, और परमेश्वर ने काम किया था।

क्या आपने देखा, मित्रों? जागृति के दिनों में, प्रेरितों और जागृति योद्धाओं को परमेश्वर द्वारा अलौकिक कार्यों को प्रकट करने के लिए सामर्थी रूप से इस्तेमाल किया गया था, यह साबित करते हुए कि यीशु जीवित है! आज भी, पुनर्जागृति के इस समय में, प्रभु हमें अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। वह हमारे माध्यम से और भी महान, असाधारण चमत्कार करने के लिए उत्सुक है। लेकिन आधार वही है - विश्वास और पूर्ण समर्पण। तो, मित्रों, क्या आप तैयार हैं? (अधिक अपडेट आने वाले हैं...)

Revival IGNITERS Monthly Fellowship

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार

Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार

THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार

Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

प्रार्थना मार्गदर्शिका मई 2025

बिजली का अभाव

भारत की बिजली की खपत 2027 तक सालाना 6.3% बढ़ने का अनुमान है। अकेले 2024 में, खपत में 5.8% की वृद्धि हुई। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण ने अनुमान लगाया है कि 2025 में भारत की अधिकतम बिजली की खपत 270 गीगावाट से अधिक होगी। 30 नवंबर, 2024 तक, भारत की कुल बिजली उत्पादन क्षमता 83.8% बढ़कर 249 गीगावाट (31 मार्च, 2014 तक) से 457 गीगावाट हो गई है। पिछली गर्मियों में, बिजली की मांग 20,830 मेगावाट थी, और इस साल, इसके 22,000 मेगावाट तक बढ़ने की उम्मीद है।

प्रार्थना विषय:

1) गर्मियों के दौरान बिना रुकावट बिजली आपूर्ति और बिजली उत्पादन में वृद्धि के लिए प्रार्थना करें।

2) प्रार्थना करें कि सरकार गर्मियों में बढ़ती खपत के कारण बिजली कटौती को रोकने के लिए कार्रवाई करे।

3) अकेले तमिलनाडु को प्रतिदिन 15,000 मेगावाट की आवश्यकता होती है, जो गर्मियों में बढ़कर 17,000 मेगावाट हो जाती है - प्रार्थना करें कि ये ज़रूरतें पूरी हों।

4) पवन ऊर्जा के उचित उत्पादन के लिए प्रार्थना करें।

ताप की लहर

वैश्विक मौसम केंद्र (ग्लोबल वेदर सेंटर) ने 2025 में भारत में अत्यधिक गर्मी की चेतावनी दी है।
2023-2024 की गर्मियों को 124 वर्षों में सबसे गर्म दर्ज किया गया। 2024 में, तापमान सामान्य से 0.54 डिग्री सेल्सियस अधिक था। दुनिया भर में, 2024 में 219 गंभीर जलवायु घटनाएँ हुईं, जिससे 3,700 मौतें हुईं और लाखों लोगों को पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस साल अत्यधिक गर्मी की आशंका के साथ, गर्मियों से संबंधित बीमारियों को रोकने के लिए सावधानी बरतना महत्वपूर्ण है। सरकार को गर्मी से निपटने के लिए विभिन्न उपायों की योजना बनानी चाहिए और उन्हें लागू करना चाहिए।

प्रार्थना विषय:

1) प्रार्थना करें कि सरकार लोगों को गर्मी से होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए निवारक उपाय करे।

2) परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे जलवायु की स्थिति बदलें ताकि अत्यधिक गर्मी के कारण कोई मृत्यु न हो।

3) बच्चों और बुज़ुर्गों पर परमेश्वरीय सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

4) उच्च तापमान के संपर्क में आने वाले बाहरी कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

पानी की कमी

भारत में झीलों, तालाबों, नदियों, समुद्रों और धाराओं सहित विभिन्न जल निकाय हैं। हालाँकि, 50% से अधिक आबादी के पास स्वच्छ पेयजल तक पहुँच नहीं है। हर साल, लगभग 200,000 लोग स्वच्छ पानी की कमी के कारण मर जाते हैं। यदि पानी की खपत वर्तमान दर से जारी रहती है, तो 2030 तक, भारत के पास अपनी ज़रूरत का केवल आधा पानी होगा। 2025 में, 18 करोड़ लोगों को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ेगा। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि खराब नियोजन के कारण, भारत 2025 में गंभीर जल संकट का सामना करेगा। वैश्विक स्तर पर, 19 देश अपने 50% से अधिक जल आपूर्ति के लिए पड़ोसी देशों पर निर्भर हैं, और दुनिया की एक तिहाई आबादी के पास पर्याप्त पानी नहीं है। पाँच में से एक व्यक्ति के पास सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं है।

प्रार्थना विषय:

1) गर्मियों के दौरान पर्याप्त जल आपूर्ति और जल निकायों के भरे रहने के लिए प्रार्थना करें।

2) प्रार्थना करें कि सरकार स्वच्छ पेयजल की कमी के कारण होने वाली मौतों को रोकने के लिए कार्रवाई करे।

3) प्रार्थना करें कि पानी के लिए पड़ोसी देशों पर निर्भर राष्ट्रों को अच्छी सरकारी नीतियों के माध्यम से पर्याप्त आपूर्ति मिले।

4) पानी की कमी को रोकने के लिए प्रचुर वर्षा के लिए प्रार्थना करें।

सार्वजनिक परीक्षा परिणाम

मार्च और अप्रैल में 12वीं, 11वीं और 10वीं कक्षाओं के लिए सार्वजनिक परीक्षाएँ आयोजित की गईं। कुल 821,057 छात्रों ने 12वीं कक्षा की परीक्षा दी, 823,261 ने 11वीं कक्षा की परीक्षा दी और 913,036 छात्रों ने 10वीं कक्षा की परीक्षा दी। शिक्षा विभाग ने घोषणा की है कि 12वीं कक्षा के परिणाम 9 मई को जारी किए जाएंगे, जबकि 10वीं और 11वीं कक्षा के परिणाम 19 मई को घोषित किए जाएंगे।

प्रार्थना विषय:

1) अपने परीक्षा परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे प्रत्येक छात्र के लिए प्रार्थना करें।

2) प्रार्थना करें कि सभी छात्रों को अच्छे अंक प्राप्त हों और वे सफलता प्राप्त करें।

3) प्रार्थना करें कि छात्रों को उनकी अपेक्षा के अनुसार अंक प्राप्त हों और उनकी अपेक्षाएँ पूरी हों।

4) प्रार्थना करें कि कोई भी छात्र असफलता के कारण हानिकारक निर्णय न ले और उनमें आगे बढ़ने का साहस हो।

जागृति के बीज

एडोनिराम जडसन का जन्म 9 अगस्त, 1788 को मैल्डेन, मैसाचुसेट्स में हुआ था। मात्र तीन वर्ष की आयु में ही उन्होंने बाइबल का एक पूरा अध्याय पढ़कर अपने पिता को चकित कर दिया था। अपने बेटे की असाधारण क्षमता को पहचानते हुए, उनके पिता ने उनके शानदार दिमाग को विकसित करने के लिए उन्हें उपलब्ध सबसे बेहतरीन स्कूल में दाखिला दिलाया। बारह वर्ष की आयु तक, जडसन ने पहले ही ग्रीक भाषा में महारत हासिल कर ली थी, जो अपनी जटिलता के लिए प्रसिद्ध थी।

हालांकि जडसन का स्वास्थ्य अच्छा था, लेकिन चौदह वर्ष की आयु में उन्हें एक गंभीर बीमारी ने जकड़ लिया, इतनी गंभीर कि ऐसा लग रहा था कि वे बच नहीं पाएंगे। फिर भी, परमेश्वर की कृपा से, वे चमत्कारिक रूप से ठीक हो गए। इस दौरान, जडसन के सबसे करीबी दोस्तों में से एक कट्टर नास्तिक था, जिसने लगातार उनके मन में संदेह के बीज बोए, जिससे अंततः वे परमेश्वर में विश्वास से दूर हो गए।

हालांकि, एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब जडसन ने अपने जीवन, अपने विचारों और अपने विकल्पों पर गहराई से विचार किया और अपने तरीकों की गलती को पहचाना। धर्मशास्त्र का अध्ययन करने की इच्छा से, उन्होंने एक सेमिनरी में प्रवेश चाहा, लेकिन तत्काल नामांकन संभव न होने के कारण, उन्होंने तीन महीने घर पर ही बिताए और पुराने और नए नियम का बड़ी गहराई से अध्ययन किया, और पवित्रशास्त्र की गहन सच्चाइयों को समझने का प्रयास किया। इस अवधि के दौरान, उन्होंने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया, तथा उन्हें विश्वास हो गया कि परमेश्वर का उनके लिए एक विशिष्ट उद्देश्य है।

तभी उन्हें द ईस्ट इंडिया कंपनी नामक एक पुस्तक मिली, जिसमें बताया गया था कि किस प्रकार भारत में यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा था तथा इसका वहां के लोगों के जीवन पर क्या परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ रहा था। इस वृत्तांत ने जडसन के भीतर भारत में एक मिशनरी के रूप में सेवा करने की गहरी इच्छा जगाई। मिशनरी कार्य के प्रति जुनून से प्रेरित होकर, उन्होंने कलकत्ता के लिए यात्रा की। फिर भी, उनके आगमन के कुछ समय बाद, उन्हें बताया गया कि वहां अब और मिशनरियों की आवश्यकता नहीं है। इससे विचलित हुए बिना, वे तेजी से एक जहाज पर सवार हुए तथा भारी कठिनाइयों के बीच, बर्मा (वर्तमान म्यांमार) की यात्रा की, जहां उन्होंने प्रभु के कार्य को निष्ठापूर्वक पूरा किया। बाइबिल का बर्मी भाषा में अनुवाद करने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर, उन्होंने लगन से इसे सीखा। अनगिनत विरोधों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने दृढ़ता से काम किया और सफलतापूर्वक अनुवाद पूरा किया। इसी दौरान, एक दिन, शाही सैनिकों के एक समूह ने जडसन के घर में धावा बोला, उसे पकड़

लिया और घोषणा की, "राजा ने तुम्हें बुलाया है! तुरंत आओ।" बिना देर किए, वे उसे घसीट कर ले गए और उसे एक निंदित अपराधी की तरह कैद कर लिया।

कई महीनों तक, उसे उचित भोजन के बिना बहुत कष्ट सहना पड़ा। उसके कपड़े फाड़ दिए गए और उसके हाथ भारी जंजीरों से बंधे हुए थे। चूँकि जडसन अब राजा का कैदी था, इसलिए अधिकारियों को उसके घर से सारा सामान जब्त करने के लिए भेजा गया। इसकी आशंका करते हुए, उसकी पत्नी ऐन जडसन ने जल्दी से अपने कुछ कीमती सामान और, सबसे महत्वपूर्ण बात, जडसन की कीमती अनुवाद पांडुलिपियाँ इकट्ठी कीं। उसने उन्हें सावधानी से लपेटा, एक गड्ढा खोदा और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए एक गुप्त स्थान पर दफना दिया।

कई दिन बीतने के बाद, उसने पांडुलिपियों को खोदा और कीमती कागजों को एक तकिए के अंदर छिपा दिया। फिर वह इसे जेल ले जाने में कामयाब रही और जडसन को सौंप दिया। पन्नों को पढ़ते हुए, उसने जहाँ भी ज़रूरत थी, सुधार किए, अपने दुख के बीच भी अपने काम से अपार सांत्वना और संतुष्टि प्राप्त की।

एक समय, जडसन को दूसरी जेल में स्थानांतरित कर दिया गया। वह तकिया अपने साथ ले गया, उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। हालाँकि, गुस्से में, एक जेल अधिकारी ने उससे तकिया छीन लिया और उसे फेंक दिया, उसे साथ ले जाने से मना कर दिया। दु:ख से अभिभूत, जडसन बेकाबू होकर रोने लगा, यह सोचकर कि बर्मी लोगों को उनकी अपनी भाषा में परमेश्वर का वचन देने के लिए वर्षों की कड़ी मेहनत अब हमेशा के लिए खो गई थी।

फिर भी, निराशा की गड्ढे में भी, वह अपने हृदय की गहराई से ईमानदारी से प्रार्थना करता रहा: "हे प्रभु, इन लोगों तक उनकी मातृभाषा में आपका वचन पहुँचाने के लिए किया गया यह प्रयास व्यर्थ न जाए। शैतान को विजयी न होने दें। इस बोझ को अपने ऊपर लें और इसे जीत तक पहुँचाएँ!"

लेकिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर के मन में एक पूरी तरह से अलग योजना थी। फेंका हुआ तकिया एक मसीही को मिला, जिसने उसके अंदर छिपे खजाने को देखकर आश्चर्य से भर गया। इसके महत्व को पहचानते हुए, उसने पूरी पांडुलिपि छपवाने के लिए बाइबल सोसाइटी से संपर्क किया। इस प्रकार, पूरी बाइबल बर्मी भाषा में खूबसूरती से प्रकाशित हुई। जब यह खबर एडोनिराम जडसन तक पहुँची, तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। हालाँकि वह अभी भी कैद में था, लेकिन यह देखकर उसे बहुत खुशी हुई कि कैसे परमेश्वर ने इस काम को अद्भुत तरीके से पूरा किया। परमेश्वर ने जडसन के हृदय से निकली दर्दभरी प्रार्थनाओं को सुन लिया था।

युवा होने के बावजूद, जडसन ने एक जोशीला और अटल निर्णय लिया था: "मैं तब तक इस भूमि को नहीं छोड़ूँगा जब तक कि मसीह का क्रूस बर्मा में मजबूती से स्थापित नहीं हो जाता।"

उनके संकल्प के फलस्वरूप, तीन दशक बाद, बर्मा ने 63 कलीसिया, 163 स्थानीय पादरी और कार्यकर्ताओं, और 7,000 से अधिक बर्मी लोगों की स्थापना देखी, जिन्होंने मसीह को अपनाया था और उनके लिए जी रहे थे।

1850 में, तपेदिक(क्षय रोग) से गंभीर रूप से पीड़ित, जडसन ने इलाज के लिए समुद्री यात्रा शुरू की।62 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया और उनके शरीर को समुद्र में दफना दिया गया। आज भी, मिशनरी जडसन द्वारा छोड़े गए सेवकाई को उन स्थानों पर आगे बढ़ा रहे हैं जहाँ कभी उनके पदचिह्न पड़े थे। अपने पूरे जीवन में अनगिनत कठिनाइयों, परीक्षणों और पीड़ाओं को सहने के बावजूद, परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से जडसन को सहारा दिया। उनके विश्वासयोग्य मेहनत के माध्यम से, बर्मा में हजारों लोग मसीह को जान पाए हैं। जडसन ने अपना जीवन पूरी तरह से बर्मा के लोगों को समर्पित कर दिया था।

प्रिय युवा पाठकों, जब आप इसे पढ़ेंगे, तो क्या आप एक पल के लिए रुकेंगे और परमेश्वर के इन सेवकों के बारे में सोचेंगे जिन्होंने उनके मिशन को पूरा करने के लिए सीमाएँ पार कीं?

क्या आप स्वयं को इस तरह समर्पित करेंगे कि बाहरी देशों में अजनबी लोग परमेश्वर को जान सकें?

क्या आप अपने जीवन में उस अलौकिक बुलाहट को महसूस करते हैं?

क्या आपकी कलीसिया ऐसा बनेगी जो अपने मजदूरों को उनके फसल के खेत में भेजेगी?

क्या आप मिशन के लिए जोश से भरे एक पात्र बनने के लिए उठेंगे?

हवाई किले से कैनवा तक...!

प्रिय युवा उपलब्धि प्राप्तकर्ताओं, आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं! जीवन में सबसे महत्वपूर्ण सबक यह समझना है कि हर किसी के पास अपने भविष्य को लेकर सपने होते हैं। लेकिन अगर कोई सपना सिर्फ सपना ही रह जाए, तो वह कभी सफलता की ओर नहीं ले जा सकता। जब हम उस सपने को हकीकत बनाने की दिशा में कदम उठाना सीखते हैं, तभी हम वास्तव में कुछ उल्लेखनीय हासिल कर सकते हैं। और आज, आपके सामने एक सपने देखने वाले की प्रेरक यात्रा है, जिन्होंने अपने दर्शन को वास्तविकता में बदल दिया।

मेलानी पर्किन्स का जन्म 1987 में ऑस्ट्रेलिया के पर्थ में हुआ था। अपने स्कूल के दिनों में भी, उनमें एक उद्यमिता की भावना थी, वे हस्तनिर्मित उत्पाद बनाती और बेचती थीं। छोटी उम्र से ही, उन्हें व्यवसाय और नवरचना का जूनून था। विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई के दौरान, उन्होंने देखा कि डिज़ाइन सॉफ़्टवेयर कितना जटिल हो सकता है, जिससे कई लोगों के लिए इसका उपयोग करना मुश्किल हो जाता है। इससे एक विचार आया—ग्राफ़िक डिज़ाइन की दुनिया को सरल बनाने का।

2007 में, मेलानी ने अपने साथी क्लिफ ओब्रेच के साथ मिलकर फ़्यूज़न बुक्स नामक एक ऑनलाइन डिज़ाइन प्लेटफ़ॉर्म शुरू किया। हालाँकि, उनका अंतिम सपना एक वैश्विक ऑनलाइन डिज़ाइन प्लेटफ़ॉर्म बनाना और इसे सभी के लिए सुलभ बनाना था। अपने

दर्शन को जीवन्त बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, उन्होंने क्लिफ ओब्रेच और कैमरन एडम्स के साथ मिलकर 2013 में "कैनवा" की स्थापना की।

शुरुआती दिन आसान नहीं थे। जब मेलानी ने निवेशकों के सामने अपना विचार प्रस्तुत किया, तो उन्हें कई बार अस्वीकृति का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। अपने सपने में अटूट दृढ़ता और विश्वास के साथ, वह आगे बढ़ती रहीं और अंत में, उन्होंने जीत हासिल की। आज, 'कैनवा' दुनिया के सबसे सफल डिज़ाइन प्लेटफ़ॉर्म में से एक है, जो साबित करता है कि दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने पर सपने वास्तव में हकीकत बन सकते हैं!

आज, 'कैनवा' दुनिया के अग्रणी डिज़ाइन प्लेटफ़ॉर्म के रूप में उभरा है, जो 190 से अधिक देशों में रचनाकारों को सशक्त बनाता है। एक साहसिक दृष्टिकोण से लेकर अरबों डॉलर के उद्यम तक, कैनवा की यात्रा प्रेरणादायक से कम नहीं है।

प्रिय पाठकों, अपने सपनों को हकीकत में बदलने के लिए, आपको हर चुनौती का डटकर सामना करना सीखना चाहिए। अपने सपनों को कभी न छोड़ें - मेलानी की तरह उनका लगातार पीछा करें। सफलता कोई दूर की मंजिल नहीं है; यह आपकी पहुँच में है। आपका सपना महज एक कल्पना बनकर रह जाएगा या एक विजयी वास्तविकता में तब्दील हो जाएगा - यह सब आप पर निर्भर करता है ..!

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 29/06/2025 और 31/08/2025 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

You Tube Jesus Redeems - Hindi

Comforter DIGITAL CHANNEL www.comfortertv.com

संपर्क संख्या : +919750955548

अंजीर का पेड़ पुनः अंकुरित हुआ।

प्रिय मित्रों, यीशु मसीह बहुमूल्य नाम में अभिवादन! मैं इस ऐतिहासिक घटना, "अंजीर के पेड़ का पुनर्जीवित होना" के माध्यम से एक बार फिर आपसे मिलकर बहुत खुश हूँ।

पिछले महीने, हमने इस्राएल राष्ट्र के ऐतिहासिक गठन का पता लगाया। राजा दाऊद, जिन्होंने चालीस वर्षों तक इस्राएल पर शासन किया, इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के लिए एक मंदिर बनाने की गहरी इच्छा रखते थे। हालाँकि, परमेश्वर ने दाऊद से कहा, "तुम मेरे लिए मंदिर नहीं बनाओगे, बल्कि तुम्हारा बेटा सुलैमान मेरे लिए मंदिर बनाएगा।"

फिर भी, दाऊद ने मंदिर के निर्माण की तैयारी में प्रचुर मात्रा में संसाधन - सोना, चांदी, कांस्य और लकड़ी - एकत्र किए। दाऊद के शासनकाल के बाद, उनके बेटे सुलैमान ने यरूशलेम में मोरिय्याह पर्वत (वही पर्वत जहाँ अब्राहम इसहाक को बलि के रूप में चढ़ाने के लिए ले गया था) पर एक शानदार मंदिर का निर्माण किया। आज के भारतीय रुपये के मूल्यांकन के अनुसार, यरूशलेम मंदिर की निर्माण लागत लगभग 1660 खरब रुपये होने का अनुमान है, जिससे आपको यह अंदाजा हो जाएगा कि यह मंदिर कितना भव्य था।

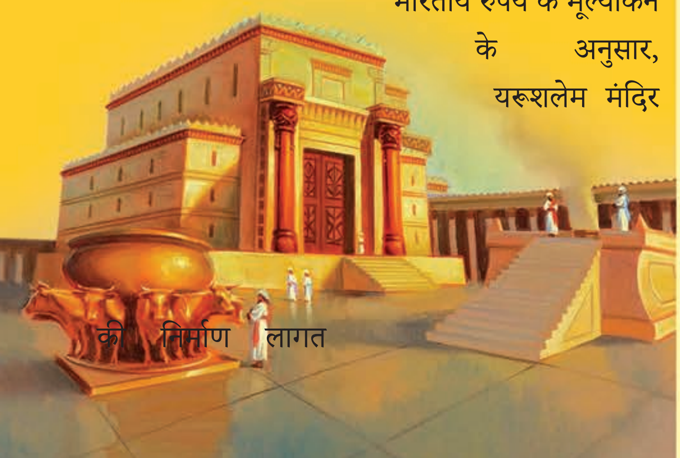

इस भव्य यरूशलेम मंदिर को बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने 583 ई.पू. में नष्ट कर दिया था (प्राचीन बेबीलोन आधुनिक इराक से मेल खाता है)। बेबीलोन के लोगों ने मंदिर से अमूल्य खजाने लूट लिए।

बेबीलोन पर राजा साइरस के शासनकाल के दौरान, प्रभु ने जरुब्बाबेल (536-519 ई.पू.) नामक एक सेवक को खड़ा किया, जिसके मार्गदर्शन में दूसरे मंदिर का निर्माण किया गया।

समय के साथ, यह दूसरा मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो गया, और यरूशलेम में शासकों के कई बदलाव हुए। राजा हेरोदेस के शासनकाल के दौरान, उसने दूसरे मंदिर का पुनर्निर्माण करके यहूदियों का पक्ष जीतने की कोशिश की।

यह पुनर्निर्माण किया गया दूसरा मंदिर यीशु के समय में बना था। यीशु ने इस मंदिर के बारे में भविष्यवाणी करते हुए

कहा, "ऐसे दिन आएंगे जब एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ा जाएगा जिसे गिराया न जाए।" (लूका 21:6)

यीशु की सांसारिक सेवकाई के बाद - उनका जन्म, जीवन, चमत्कार, क्रूस पर चढ़ना और पुनरुत्थान - पिन्तेकुस्त के दिन ऊपरी कमरे में प्रार्थना कर रहे शिष्यों पर पवित्र आत्मा उंडेला गया। आत्मा से सशक्त होकर, शिष्यों ने जोश से सेवा की, सामर्थ प्रकट की, लोगों को उद्धार की ओर ले गए, और परिणामस्वरूप कलीसियाओं में जबरदस्त वृद्धि हुई। यरूशलेम में प्रज्वलित पुनर्जागृति की आग यहूदिया, सामरिया, पड़ोसी देशों, द्वीपों, महाद्वीपों और यहाँ तक कि रोम तक फैल गई।

ईमानदारी से प्रार्थना करें कि पुनर्जागृति की आग आप पर भी उंडेली जाए, ताकि आप भी इस स्वर्गीय लौ के साथ चमक सकें।

"अंतिम दिनों में, परमेश्वर कहता है, मैं अपनी आत्मा सभी लोगों पर उंडेलूँगा। तुम्हारे बेटे और बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, तुम्हारे बूढ़े स्वप्न देखेंगे। यहाँ तक कि मेरे सेवकों, पुरुषों और महिलाओं दोनों पर, मैं

उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूँगा, और वे भविष्यवाणी करेंगे"। (प्रेरितों 2:17-18)

रोमियों के समय में, 70 ई. में, यरूशलेम में दूसरा मंदिर जला दिया गया था। इस्राएली बिखर गए थे; देश में कोई भी इस्राएली नहीं बचा था। इस्राएल में एक भी यहूदी नहीं बचा था। इस्राएल का नाम दुनिया के नक्शे से मिटा दिया गया था; यरूशलेम और उसका मंदिर आग में जलकर राख हो गया, और इस्राएल राष्ट्र खत्म हो गया।

प्रिय मित्रों, अगले महीने हम "अंजीर के पेड़ को पुनर्जीवित" करने के बारे में अपनी चर्चा जारी रखेंगे।

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

Mumbai (Dharavi)
World Revival Prayer Canter, T/1, Block No.11,
90 Feet Road, Rajiv Gandhi Nagar Dharavi, Mumbai - 400 017
Email: br.dharavi@jesusredeems.org, Ph: +91 8082410410

Mumbai (Malad)
World Revival Prayer Center, Bethel, Plot 305/E,
Mith Chowky Marve Road, Malad(w) Mumbai - 400064
Ph: +91 9664050567

Ranchi
World Revival Prayer Centre, Kadru Sarna Toli,
Near Argora Railway Station, Road no -1, Doranda P.O
Ranchi - 834 002, Jharkand,
Email: br.ranchi@jesusredeems.org, Ph: 9523336010

Chandigarh
World Revival Prayer Centre, SCO 1st Floor, Dhakoli-Kalka Road,
NH-22, Near City Court Zirakpur, Punjab- 160104
Email: br.chandigarh@jesusredeems.org, Ph: 9417726492

Delhi
World Revival Prayer Centre, Plot no 152, Ground floor,
Pratap nagar,opposite harinagar bus depot, New Delhi - 110064
Email: br.delhi@jesusredeems.org, Ph: 011-25616253 / 35580428

Come and Pray

आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़े।

एक रोमन कैथोलिक परिवार में इकलौती बेटी के रूप में जन्मी, उन्होंने इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की और सरकारी नौकरी के लिए प्रयास करते हुए अनगिनत अस्वीकृतियों और हतोत्साहित करने वाले शब्दों को सहन किया। फिर भी, उन्होंने यीशु के वचन को दृढ़ता से थामे रखा, शंका को अपने विश्वास को हिलाने नहीं दिया। अडिग दृढ़ संकल्प और दृढ़ता के साथ, उन्होंने अपने सपने का पीछा किया और आज एक सरकारी अधिकारी के रूप में काम करती हैं।

क्या आप हमें अपने परिवार और प्रारंभिक जीवन के बारे में बता सकते हैं?

मेरा नाम मारिया एस्तेर बेबी है। मेरा जन्म और पालन-पोषण कोविलपट्टी, थूथुकुडी जिले में हुआ। मैंने अपनी स्कूली शिक्षा और कॉलेज की पढ़ाई वहीं पूरी की। मेरा जन्म एक रोमन कैथोलिक मसीही परिवार में हुआ और मुझे गहरी भक्ति के साथ पाला गया। मैंने अपने धर्म की सभी रीतियों का पालन किया। मैं अपने माता-पिता की इकलौती बेटी हूँ। बचपन से ही मैं एक बेहतरीन छात्रा रही हूँ। मैंने 2012 में अपनी इंजीनियरिंग की डिग्री पूरी की और बाद में सरकारी नौकरी पाने का प्रयास किया। हालाँकि, मैंने शुरू में सरकारी नौकरी पाने के इरादे से पढ़ाई नहीं की थी।

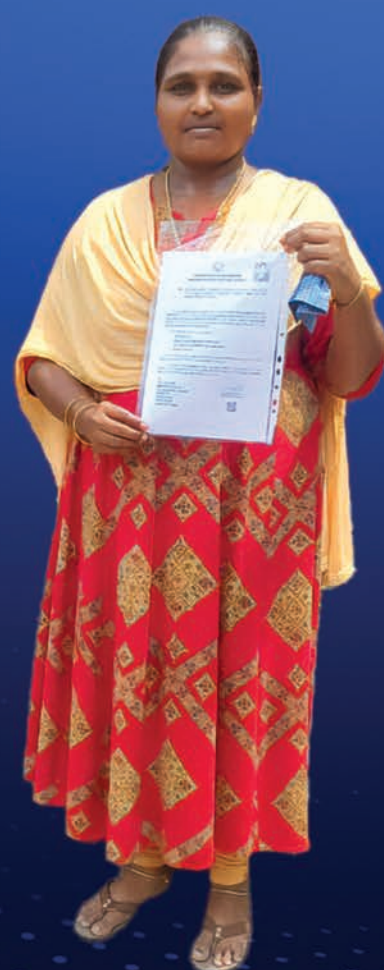

ठीक...तो आपने सरकारी नौकरी पाने का प्रयास किया। क्या आप सफल रहीं?

पारिवारिक परिस्थितियों और व्यक्तिगत संघर्षों के कारण, मैं सरकारी नौकरी के लिए अपने प्रयासों को जारी रखने में असमर्थ थी। हालाँकि, 1 जनवरी, 2020 को मेरा उद्धार हो गया। उसके बाद, मेरा आध्यात्मिक जीवन बदलने लगा। मैंने यीशु की और भी ज़्यादा तलाश की। कई चुनौतियों के बीच, प्रभु ने मुझसे बात की, और मुझे सरकारी नौकरी की परीक्षा फिर से देने के लिए प्रेरित किया। बिना किसी पृष्ठभूमि समर्थन या प्रभाव के, मैंने केवल परमेश्वर पर विश्वास के साथ फिर से प्रयास किया। मेरे आस-पास के लोगों के हतोत्साहित करने वाले शब्दों के बावजूद, मैंने 2022 में TNPSC परीक्षा के लिए अध्ययन करना शुरू कर दिया। अपनी तैयारी के एक महीने बाद, मेरी दाहिनी आँख की दृष्टि कम होने लगी। जब तक कारण की पहचान हुई, तब तक मैं सिर्फ़ एक सप्ताह में अपनी 75% दृष्टि खो चुकी थी। कई मेडिकल टेस्ट के बावजूद, परिणाम सामान्य थे। डॉक्टरों को वायरल संक्रमण का संदेह था

और चेतावनी दी कि और देरी से पूरी तरह अंधापन हो सकता है।

ओह... परीक्षा की तैयारी के दौरान आपको शारीरिक कमज़ोरी का सामना करना पड़ा। आपने इसका सामना कैसे किया?

“आईए प्रार्थना करें" (Jebikkalaam Vaanga) कार्यक्रम में भाई मोहन अक्सर कहा करते थे, “डॉक्टर जो नहीं है उसे घोषित करेंगे, लेकिन चिकित्सकों के लिए एक चिकित्सक है - यीशु। अपने सिर पर हाथ रखें और प्रार्थना करें।" इसके बाद, मैंने हर दिन, अपनी कमज़ोरी में भी, प्रार्थना की, “हे प्रभु, मुझे अपनी सामर्थ दो।" परमेश्वर ने अपने वचन के माध्यम से मुझसे बात की, और कहा, **“मैं तुम्हारा अनन्त प्रकाश बनूँगा”** और **“मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।”** इन शब्दों ने मुझे मज़बूत किया। मैंने इसी विश्वास के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखी। जब मैंने प्रारंभिक परीक्षा लिखी, तो मैंने अपनी दाहिनी आँख को अपने हाथ से ढक लिया और केवल अपनी बाईं आँख से परीक्षा लिखी। हालाँकि मुझे पास होने का कोई आशा नहीं थी, फिर भी परमेश्वर ने मुझे परीक्षा के पहले चरण में सफल होने में मदद की।

अपनी शारीरिक कमज़ोरी के बावजूद, मैंने परमेश्वर के वादों पर भरोसा किया। जैसे-जैसे मैं मुख्य परीक्षा की तैयारी कर रही थी, मेरी सेहत बिगड़ती गई। "अचीवर्स 2023” मीटिंग के दौरान, एक छात्रा ने अपनी गवाही साझा की कि कैसे परमेश्वर ने उसकी कमज़ोरी को गवाही में बदल दिया। इससे प्रेरित होकर, मैंने प्रार्थना की, “हे प्रभु, मेरी कमज़ोरी को उसकी तरह गवाही में बदल दो।" मैं प्रतिदिन प्रार्थना में परमेश्वर के आगे रोयी।

बहुत खूब...आपने प्रार्थना किया, क्या आपको अपनी विश्वासपूर्ण प्रार्थना का उत्तर मिला?

हाँ! कुछ दिनों बाद, मेरी दृष्टि स्पष्ट हो गई। मैंने अपनी आँखों में एक असामान्य चमक का अनुभव किया। प्रोत्साहित होकर, मैंने पूरी लगन के साथ अपनी पढ़ाई फिर से शुरू की और मुख्य परीक्षा दी। जनवरी 2024 में परिणाम घोषित किए गए। मेरी कुल रैंक 3,303 थी, और मेरी पिछड़ा वर्ग(BC) समुदाय रैंक 1,816 था। कई लोगों ने कहा कि इस रैंक के साथ नौकरी पाना मुश्किल होगा। लेकिन मैंने प्रार्थना की, “हे प्रभु, आपने मुझे कई कठिनाइयों के माध्यम से अध्ययन कराया; मुझे विश्वास है कि आप इस अंतिम चरण का भी ध्यान रखेंगे।" मैंने अपने विश्वास को डगमगाने नहीं दिया।

जब मैं प्रार्थना करती रही, तो परमेश्वर ने मुझे गिदोन के विश्वास की याद दिलाई, जिसने मुझे मजबूत किया। लोगों के हतोत्साहित करने वाले शब्दों के बावजूद, मैंने परमेश्वर की योजना पर भरोसा किया। 24 मई, 2024 को, जब मैं परामर्श के लिए गयी, तो किसी ने मुझसे कहा, “इस नौकरी को पाने की आपकी संभावना कम है।" लेकिन मुझे विश्वास था कि जिस परमेश्वर ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है, वह मुझे अंतिम रेखा तक ले जाएगा। और उसने ऐसा ही किया! मुझे तुरंत सरकारी नियुक्ति दे दी गई। खुशी और कृतज्ञता से अभिभूत, मैंने तुरंत आँखों में आँसू भरकर यीशु को धन्यवाद दिया।

आपने उपचार के लिए प्रार्थना की, लेकिन आपको नौकरी भी मिल गई! क्या आपको इसकी उम्मीद थी?

1 जनवरी, 2020 को, मुझे परमेश्वर से एक वायदा मिला: **"मैं तुम्हें दोगुना आशीष दूंगा।"** मुझे नहीं पता था कि वह मुझे किस क्षेत्र में आशीष देंगे, लेकिन 2024 में,

उन्होंने मुझे नौकरी दी। जब मेरी नौकरी का स्थान चुनने का समय आया, तो मैंने परमेश्वर से कहा, **"मुझे नहीं पता कि मुझे कहाँ जाना है; आप मेरे लिए चुनें।"** मेरे मन में जो स्थान था वह उस स्थान से अलग था जिसे मैंने अंततः चुना था।

लेकिन परमेश्वर ने मुझे चमत्कारिक रूप से मार्गदर्शन दिया, मुझे **तिरुचिरापल्ली में चिकित्सा और ग्रामीण स्वास्थ्य विभाग** में रखा। जो लोग कभी मुझ पर संदेह करते थे और मेरा मजाक उड़ाते थे, वे अब कहते हैं, **"एस्तेर, तुम सफल हो गई हो!"**

हमें अपने विवाहित जीवन के बारे में बताएं।

2013 में, मैंने श्री यूजीन से विवाह किया, जो उस समय सेना में सेवारत थे। 2019 में, उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली और सरकारी नौकरी पाने का प्रयास किया, लेकिन उनके सभी प्रयास विफल हो गए। वे बहुत निराश हो गया थे।

हर रात, सबके सो जाने के बाद, मैं परमेश्वर के चरणों में बैठकर रोती और प्रार्थना करती। **"पिता जो गुप्त रूप से देखता है, वह तुम्हें खुले तौर पर पुरस्कृत करेगा,** वादे के अनुसार, परमेश्वर ने मेरे पति को बिना किसी कठिन प्रक्रिया के **रिलायंस रिटेल लिमिटेड** में प्रबंधकीय पद दिया। आज, वह अपने पद पर लगातार आगे बढ़ रहे हैं। हमारी एक बेटी है जो वर्तमान में मैं चौथी कक्षा में पढ़ रहा हूँ।

आपकी सफलता के क्या कारण हैं?

परमेश्वर में मेरी अटूट आस्था।

परमेश्वर के साथ मेरा बचपन जैसा रिश्ता, उनसे एक शिक्षक की तरह मार्गदर्शन करने और यहाँ तक कि "मेरे परीक्षा के पेपर सही करने" के लिए कहना।

प्रार्थना केंद्रों से मुझे मिलने वाला चौबीसों घंटे प्रार्थना समर्थन।

अचीवर्स मीटिंग से प्रार्थना कार्ड, जिसके साथ मैं हर दिन प्रार्थना करती थी।

सबसे बढ़कर, मैंने सब कुछ परमेश्वर को समर्पित कर दिया। पढ़ाई के पहले दिन से लेकर नौकरी की जगह चुनने तक, मैंने कभी भी अपनी इच्छा के आधार पर निर्णय नहीं लिए। मैंने हमेशा परमेश्वर से कहा, **"आपने मुझे पढ़ाई करवाई, आप जानते हैं कि मेरे लिए क्या सबसे अच्छा है, आप इसका ख्याल रखते हैं।"**

वाह! प्रभु ने आपके हृदय की सबसे गहरी इच्छाएँ पूरी की हैं और आपको सम्मानित किया है। क्या आपके पास युवा पाठकों के लिए कोई सलाह है जो तब निराश महसूस करते हैं जब चीजें योजना के अनुसार नहीं होती हैं?

सबसे पहले, **यीशु पर विश्वास करें!** दूसरे चाहे कुछ भी कहें, नकारात्मक शब्दों पर ध्यान न दें। परमेश्वर के वचन को दृढ़ता से थामे रहो। **प्रतिदिन बाइबल पढ़ो, प्रार्थना करो, और परमेश्वर को तुमसे बात करने का मौका दो।** उसे अपने जीवन में पहला स्थान दो, और वह तुम्हारे लिए एक रास्ता बना देगा जहाँ कोई रास्ता नहीं दिखता!

प्रिय युवा पाठकों, बहन **मारिया एस्तेर बेबी** ने एक छोटे बच्चे की तरह यीशु पर असाधारण विश्वास और भरोसा रखा। इतना ही नहीं, बल्कि उसने अपनी पढ़ाई में भी **बहुत मेहनत** की। उसके अटूट विश्वास और समर्पण के कारण, परमेश्वर ने उसे आज **सरकारी अधिकारी** बना दिया!

आप भी, पूरी तरह से यीशु पर भरोसा कर सकते हैं! और अगर आप भरोसा करते हैं तो वह आपको मिस्र में यूसुफ और बाबुल में दानिय्येल के समान ऊपर उठाएगा, और जातियों के बीच तुम्हें ऊंचा करेगा!

चंद्रयान-5 मिशन को केंद्र सरकार ने मंजूरी दी: ISRO के चेयरमैन नारायणन ने साझा की जानकारी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) को केंद्र सरकार से चंद्रयान-5 मिशन के लिए तीन दिन पहले ही मंजूरी मिली है। जापान के साथ रोमांचक सहयोग में यह मिशन चंद्रयान-5 परियोजना की वैज्ञानिक क्षमताओं को बढ़ाएगा।

भारत ने 23 अगस्त, 2023 को इतिहास रच दिया, जब चंद्रयान-3 ने विक्रम लैंडर को बिना किसी नुकसान के चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग की। इस उपलब्धि के साथ, भारत रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद चंद्रमा पर लैंडिंग करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया।

चंद्रयान-3 के विपरीत, जिसमें एक छोटा रोवर था, चंद्रयान-5 मिशन का उद्देश्य चंद्रमा की सतह का गहन अध्ययन करना है। एक छोटे रोवर के बजाय, ISRO व्यापक सतह विश्लेषण करने के लिए 250 किलोग्राम भारी-भरकम रोवर तैनात करने की योजना बना रहा है।

ISRO ने 2008 में चंद्रयान-1 मिशन और 2019 में चंद्रयान-2 मिशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है। चंद्र सतह के नमूने एकत्र करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, संगठन का लक्ष्य 2027 तक चंद्रयान-4 मिशन को पूरा करना है। इसके अतिरिक्त, चंद्रयान-5 और चंद्रयान-6 को अगले दस वर्षों के भीतर पूरा करने की योजना है, जो अंतरिक्ष क्षेत्र में $440 करोड़ का मील का पत्थर हासिल करने के भारत के महत्वाकांक्षी लक्ष्य में योगदान देगा। चंद्रयान श्रृंखला के बाद, ISRO गगनयान मिशन के लिए भी कमर कस रहा है, जो मानव अंतरिक्ष यान में भारत के साहसिक कदम को चिह्नित करता है - अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजना।

- 8 मार्च, द हिंदू तमिल संस्करण

मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ।

मध्यस्थता की प्रार्थना!

प्रिय युवा मित्रों,
"मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ" श्रृंखला के माध्यम से, हम विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं के बारे में सीख रहे हैं। लेकिन उनके बारे में केवल पढ़ने से हमें कोई लाभ नहीं होगा। जब हम अपने व्यक्तिगत प्रार्थना समय के दौरान जानबूझकर इन प्रार्थनाओं का अभ्यास करते हैं, तो हमारा प्रार्थना जीवन गहरा, समृद्ध और कहीं अधिक प्रभावशाली हो जाएगा।
पिछले महीने, हमने हन्ना की "आंसुओं के साथ प्रार्थना" पर ध्यान दिया - एक प्रार्थना जिसने एक महान भविष्यवक्ता के जन्म का नेतृत्व किया।

इस महीने, हम अपना ध्यान "मध्यस्थता की प्रार्थना" पर केंद्रित करते हैं।

मध्यस्थता का अर्थ है दूसरे की ओर से विनती करना। दिलचस्प बात यह है कि हम उस व्यक्ति के लिए नहीं, जिसने सही काम किया है, बल्कि उस व्यक्ति के लिए मध्यस्थता करते हैं जो भटक गया है। मूसा ने प्रार्थना की, "...कृपया उनके पाप को क्षमा करें। लेकिन यदि नहीं, तो मुझे अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मिटा दें" (निर्गमन 32:32)। उनकी प्रार्थना में एक गहरा बोझ झलकता था: भले ही उन्हें स्वयं सज़ा भुगतनी पड़े, लेकिन उन्होंने सबसे बढ़कर यह चाहा कि उनके लोगों को क्षमा मिले। मूसा की मध्यस्थता का उद्देश्य किसी तरह अपने लोगों को परमेश्वर के भस्म करने वाले क्रोध से बचाना था।

हमने अक्सर अपनी ज़रूरतों के लिए ईमानदारी से प्रार्थना की होगी। लेकिन क्या हमने कभी दूसरों की ज़रूरतों के लिए भी उतनी ही ईमानदारी से प्रार्थना की है? ज़्यादातर बार, दूसरों के लिए हमारी प्रार्थनाएँ हृदय से की गई मध्यस्थता के बजाय सिर्फ़ दायित्व होता हैं। मूसा आसानी से चुप रह सकता था, यह सोचकर कि, "मैंने कोई पाप नहीं किया है - मैं इन लोगों के लिए प्रार्थना क्यों करूँ? उन्हें अपने कार्यों के परिणाम भुगतने दें।" फिर भी, उसने चुप रहना नहीं चुना। इसके बजाय, मूसा ने अपने लोगों की ओर से परमेश्वर से विनती करते हुए खड़े होकर प्रार्थना की (निर्गमन 32:10-13)। उसने उनके पापों का बोझ अपने ऊपर ले लिया और उनके उद्धार के लिए उत्साहपूर्वक मध्यस्थता की। यह वह प्रार्थना है जिसकी प्रभु हमसे अपेक्षा करते हैं।

मूसा की ईमानदारी से की गई मध्यस्थता के परिणामस्वरूप, परमेश्वर अपने भयंकर क्रोध से पलट गया (निर्गमन 32:14)। शास्त्र हमें बताता है कि प्रभु ने अपने लोगों के लिए जो आपदा लाने का इरादा किया था, उसे लाने से पीछे हट गया। यह मध्यस्थता प्रार्थना की सामर्थ का कितना प्रभावशाली प्रमाण है!

प्रिय युवा मित्रों, हमारी आंसुओं भरी प्रार्थनाओं में अपार सामर्थ है। फिर भी, बहुत बार, हम इस सामर्थ का उपयोग केवल अपनी जरूरतों या सांसारिक चिंताओं के लिए करते हैं, अपने आस-पास की नाशवान आत्माओं के लिए खड़े होने में विफल रहते हैं। याद रखें, यह हमारी प्रार्थना है, जो आंसुओं से भीगी हुई है, जो मरते हुए लोगों को बचाने का हथियार बनती है। आज से, राष्ट्र और खोई हुई आत्माओं के लिए खड़े होने के लिए स्वयं को समर्पित करें। आपकी प्रार्थनाओं के कारण बहुत से लोग नरक की लपटों से बच निकलेंगे!

भविष्यवक्ता यिर्मयाह की पुकार हमारे मनों की पुकार बन जाए! "काश, मेरा सिर जल का सोता और मेरी आंखें आंसुओं का झरना होतीं!" (यिर्मयाह 9:1)। इसे हमारे प्रार्थना जीवन का तरीका बना दें!